9

‘बड़ी बाटा’ तेलंगाना में पाठशाला की नई पुकार

सुरेश कुमार मिश्रा*

आपने अनेक उत्सव देखे सुने होंगे। कई उत्सव के बारे में पढ़ा होगा लेकिन क्या आपको चित्र बनाने, कहानी, कविता और बाल खेल के उत्सव के बारे में जानकारी है? ‘बड़ी बाटा’ उत्सव तेलंगाना में मनाया जाता है। ‘बड़ी’ का अर्थ है— पाठशाला और ‘बाटा’ का अर्थ है— रास्ता यानी कि पाठशाला की ओर जाने वाला रास्ता। इसमें बच्चे, शिक्षक, अभिभावक व समुदाय के लोग भाग लेते हैं। इसका उद्देश्य पाठशाला से वंचित बच्चों को पाठशाला की ओर आकर्षित करना होता है। इसके साथ ही पहले से पढ़ रहे बच्चे अपने अध्ययन में कितनी प्रगति कर रहे हैं, शिक्षा के संपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के मामले में व्यवस्था का निष्पादन कैसा है, मूल्यांकन पर आधारित कक्षा के साथ व्यापक स्तर पर उपलब्धि सर्वेक्षण को जानने में भी यह उत्सव सहायक है। ‘बड़ी बाटा’ सरकार की नवोन्मेषणात्मक पहल है। इसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष ‘बड़ी बाटा’ उत्सव के माध्यम से बच्चों का ध्यान पाठशाला की ओर खींचा जाता है। इस उत्सव का प्राथमिक प्रायोजन, निर्धारित उत्सव लक्ष्यों की तुलना में बच्चों के प्रदर्शन को समझने के लिए विद्यालयों को अवसर प्रदान करना होता है। इन अवसरों के आधार पर विद्यालय के सीखने के स्तर में सुधार करने के लिए एक विद्यालय स्तर की योजना तैयार की जाती है। इस तरह के उत्सवों से शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों आदि को स्वयं को सुधारने की दिशा में एक सकारात्मक कदम उठाने में मदद मिलती है। यह उत्सव शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार में एक आवश्यक भूमिका निभाता है। यह उत्सव कैसे मनाया जाता है? इसमें कौन भाग लेते हैं? इसकी क्या-क्या विशेषताएँ हैं? आदि का वर्णन इस लेख में किया गया है।

समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत देशभर में शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। तेलंगाना में पहले सर्व शिक्षा अभियान फिर समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत वर्ष 2014 से एक कार्यक्रम ‘बड़ी बाटा’ की शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, जिनमें बच्चे, विद्यालय तथा समुदाय के लोग भाग लेते हैं। ‘बड़ी बाटा’ कार्यक्रम का सबसे बड़ा उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर बच्चों को भयमुक्त वातावरण प्रदान कर उन्हें पाठशाला के प्रति रुचि जागृत करना है। उन्हें यह आश्वस्त करना है कि पाठशाला उनके लिए है और उनके बिना पाठशाला शून्य है। सबसे बड़ी और खास बात यह है कि पाठशाला तथा समुदाय प्रबंधन इस बात पर ज़ोर दे कि हर बच्चा विशेष है। हर एक को संबोधित करने का प्रयास करना चाहिए। इन सबके अतिरिक्त

* *राज्य संसाधक,* शिक्षा विभाग, तेलंगाना सरकार, हैदराबाद

© NCERT not to be republished

'बड़ी बाटा' कार्यक्रम के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा को सर्वव्याप्त, सुलभ पहुँच व उसका प्रतिधारण, शिक्षा में लिंग व सामाजिक ऊँच-नीच आधारित अंतर को पाटने और बच्चों के अधिगम स्तर में वृद्धि के लिए सर्वव्याप्त पहुँच प्रदान करने हेतु निर्देश दिया गया है।

क्या है 'बड़ी बाटा'

'बड़ी बाटा' एक सरल और सहज कार्यक्रम है। इसमें स्थानीय बच्चों को पाठशाला की ओर आकर्षित करने का प्रयास किया जाता है। 'बड़ी' का अर्थ है— पाठशाला और 'बाटा' का अर्थ है— रास्ता यानी कि पाठशाला की ओर जाने वाला रास्ता। शिक्षकों तथा पाठशाला में पढ़ने वाले बच्चों की सहायता से एक रैली निकाली जाती है। इसमें जो बच्चे पाठशाला से वंचित हैं उनके घर जाकर उन्हें पाठशाला में आने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस रैली में माता-पिता और समुदाय के अन्य लोग भी भाग लेते हैं। इसके लिए जो प्रक्रिया अपनाई जाती है, वह विशेष रूप से आयोजित की जाती है।

'बड़ी बाटा' का आयोजन

'बड़ी बाटा' कार्यक्रम राज्य के सभी गाँवों में अनिवार्य रूप से आयोजित किया जाता है। इसके लिए विधिवत ढंग से सरकारी आदेश जारी किए जाते हैं। इस आदेश का पालन करना गाँवों की पाठशालाओं की ज़िम्मेदारी होती है। जिस गाँव में बड़ी बाटा उत्सव आयोजित करना है, उस गाँव व समुदाय के माता-पिता अभिभावकों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के सदस्यों को इस कार्यक्रम की ज़िम्मेदारी में शामिल किया जाता है। ग्राम पंचायत समिति के सदस्य इस काम में मदद करते हैं। अध्यापक, अभिभावक और बच्चों की रैली बनाने के उपरांत उनसे कहा जाता है कि वे लोग विद्यालय से आरंभ होकर उन बच्चों के घर जाएँ जो बच्चे पाठशाला छोड़ चुके हैं। सभी अध्यापक बच्चों के साथ बारी-बारी उन घरों पर जाते हैं जिन घरों के बच्चे पाठशाला की शिक्षा से अपना नाता किसी कारणवश तोड़ चुके हैं। ऐसा करने से पाठशाला छोड़ चुके बच्चों को प्रेरणा मिलती है और वह अपने साथी मित्रों को देखकर पाठशाला के प्रति लालायित होते हैं।

'बड़ी बाटा' में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम

इस अवसर पर पाठशाला से वंचित बच्चों को पशु-पक्षियों के किस्से, फल और फूलों की कहानियाँ आदि सुनाई जाती हैं। साथ ही बाल मज़दूरी मिटाने के लिए अच्छे-अच्छे नारे दिए जाते हैं, जैसे— पेद्दलु पनी की पिल्ललु बडी की (इसका अर्थ है— घर के वयस्क मज़दूरी करने और बच्चे पाठशाला पढ़ने जाएँगे।), अम्माई चदुवु जगति की वेलुगु (इसका अर्थ है— लड़की की शिक्षा विश्व की जगमगाहट है।) इस अवसर पर बच्चों को कॉपी, पेंसिल और पुस्तकें दी जाती हैं। बच्चों के हाथों में यह सारी चीज़ें इतनी सुंदर लगती हैं कि उस संदर्भ में एक गीत गाया जाता है। बच्चे अपने मनपसंद चित्र बनाते हैं और उसे सुनकर एवं देखकर शिक्षक उसके बारे में कुछ वाक्य बोलते हैं। ऐसा करने से बच्चे, समुदाय के लोग बड़े आनंदित होते हैं। साथ ही माता-पिता अथवा अभिभावकों को प्रेरणा मिलती है। ऐसे संदर्भ में जो कोई माता-पिता अथवा अभिभावक अपने बच्चों को पाठशाला से वंचित रखते हैं उन्हें अपने बच्चों को पाठशाला भेजने की उत्सुकता जागृत होती है। बच्चे अपने-अपने चित्रों पर अपने मनपसंद नाम लिखते हैं। इससे उन बच्चों

© NCERT not to be republished

को एहसास होता है कि यह चित्र उन्होंने खुद बनाया है और इससे वे प्रेरित होते हैं।

'बड़ी बाटा' में शिक्षकों की भूमिका

शिक्षक *रामायण, महाभारत* आदि की कथाएँ, किस्से, मिथक और पौराणिक कथाएँ, मंदिर और पर्व पर आधारित दंत कथाएँ बच्चों को सुनाते हैं। तेलंगाना की प्रसिद्ध पुस्तक *पेद्दा बाल शिक्षा* में ऐसी कई सारी बातें बताई गई हैं। शिक्षक व अभिभावक समूह में बैठकर बारी-बारी से पाठशाला छोड़ चुके बच्चों के घर पर जाते हैं। बड़ी बाटा कार्यक्रम उत्सव में अध्यापक की भूमिका सहायक और आयोजक की होती है। अध्यापकों को यह भी ज्ञात होता है कि जो बातें किताबों में नहीं हैं, वह गाँव के लोगों में पारंपरिक तौर पर फैली हुई हैं। ऐसे ज्ञान का उपयोग कक्षा के अंतर्गत शिक्षण प्रक्रिया में किया जा सकता है।

'बड़ी बाटा' का उद्देश्य

'बड़ी बाटा' कार्यक्रम का उद्देश्य सार्वभौमिक सुलभता एवं प्रतिधारण, प्रारंभिक शिक्षा में बालक-बालिका एवं सामाजिक श्रेणी के अंतरों को दूर करना है। इसके अतिरिक्त अधिगम की गुणवत्ता में सुधार हेतु विविध अंत:क्षेपों में अन्य बातों के साथ-साथ बच्चों की अभिरुचि वाले पाठ्य सामग्री को पाठ्यक्रम का अंग बनाना, मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ पेयजल सुविधा प्रदान करना, अध्यापक, माता-पिता, अभिभावक, समाज प्रमुख, स्वैच्छिक संगठन के सदस्यों की ज़िम्मेदारी, अकादमिक संसाधन, शिक्षा सरलीकरण करने के प्रति जागृत करना, नि:शुल्क पाठ्य-पुस्तकें एवं गणावेशों तथा अधिगम स्तरों या परिणामों में सुधार हेतु सहायता प्रदान करना आदि शामिल है।

'बड़ी बाटा' का पाठशाला से वंचित बच्चों पर प्रभाव

बच्चे जब 'बड़ी बाटा' कार्यक्रम कार्यक्रम में भाग लेते हैं और चित्र बनाते हैं तो यह जानकर खुशी से चहक उठते हैं कि अरे! यह उत्सव तो खेल जैसा है। यह बड़ा मज़ेदार है। चित्र बनाने की आज़ादी उनके भीतर निहित सृजनात्मकता को नए आयाम देने का प्रयास करती है।

बच्चे अपने चित्र में अपनी प्राथमिकता के अनुसार मनपसंद चरित्र, स्थान और पृष्ठभूमि को रूपायित करते हैं। इन चित्रों से बच्चों की मनोभावना का विश्लेषण किया जा सकता है। इसके आधार पर बच्चों की चित्र कहानी से कहानी की रूपरेखा बनाई जा सकती।

बच्चों के एक ही चित्र के कई रूप मिलते हैं। चूँकि, एक ही चित्र को कई बच्चे बनाते हैं इसलिए एक ही अवधारणा के चित्र पुनरावृत्ति में देखे जा सकते हैं। सभी बच्चे अपनी-अपनी भावना के अनुसार अपने मनपसंद चित्र बनाते हैं। कोई बच्चा दो चित्र तो कोई चार तो कोई पाँच चित्र बनाता है। इसका मतलब यह हुआ कि बच्चे एक से अधिक चित्र को अपने-अपने नज़रिए से ग्रहण करते हैं और उस पर अपनी अभिव्यक्ति करते हैं।

बच्चों के चित्र के आधार पर शिक्षक पोस्टर बनाते हैं। आगे चलकर भाषा और पर्यावरण अध्ययन को पढ़ाने के लिए इनका प्रयोग करते हैं। अंतर्कक्षा संबंधों का विकास भी इससे हो सकता है।

'बड़ी बाटा' कार्यक्रम कार्यक्रम की सबसे बड़ी सफलता यह रही कि इसके अंतर्गत दृष्टि, श्रवण शक्ति, गतिशीलता, सम्प्रेषण, सामाजिक-भावनात्मक संबंध, बुद्धिमत्ता और आर्थिक रूप से सुविधा वंचित बच्चों

© NCERT not to be republished

की पहचान हो सकी। इससे उनकी आवश्यकताओं को रेखांकित करने में सहायता मिली। सरकार ने उनके लिए आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था करते हुए उन्हें पाठशाला की ओर आकर्षित करने का जो प्रयास किया है, वह सराहनीय है। यह सराहनीय प्रयास 'बड़ी बाटा' कार्यक्रम के कारण ही संभव हो पाया है। 'बड़ी बाटा' कार्यक्रम में देखा गया कि गरीबी के कारण बच्चे जीवन के कई अनुभवों से वंचित रह जाते हैं। वे स्कूल नहीं जा पाते क्योंकि उन्हें बचपन से ही काम शुरू करना पड़ता है, ताकि वे परिवार की आय बढ़ा सकें। तेलंगाना में लड़कियों की शिक्षा के प्रति माता-पिता की उदासीनता दिखायी देती रही है। यही कारण है कि लड़कियों को अकसर घर पर ही रोक लिया जाता है ताकि वे छोटे भाई-बहनों (बच्चों) का ध्यान रख सकें और घर के कामकाज कर सकें। इसके कई कारणों में रूढ़िवादी विचारधाराएँ, जैसे— लड़की को पराई संपत्ति समझना, मात्र घरेलू कामकाज योग्य समझना, बच्चों की देखभाल करना आदि शामिल हैं। सरकार लड़कियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रही है। उनके लिए अलग से शौचालय, आराम कक्ष तथा अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़ा वर्ग की बालिकाओं के लिए अलग से पाठशालाएँ खोल रही है। यह सब 'बड़ी बाटा' कार्यक्रम के कारण संभव हो पा रहा है। इन पाठशालाओं में शिक्षा को सुचारु ढंग से चलाने की सभी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। उपर्युक्त बच्चों को विशेष महत्व देते हुए 'बड़ी बाटा' कार्यक्रम बच्चों को अपनाने का प्रयास करता है। यह एक ऐसा कार्यक्रम है जहाँ बच्चे अपनापन प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं। यह बच्चों को भयमुक्त वातावरण प्रदान करता है। बाल मित्रवत वातावरण में उन्हें फलने-फूलने के पर्याप्त अवसर मिलते हैं।

'बड़ी बाटा' में बनाए गए चित्रों की महत्ता

बड़ी बाटा कार्यक्रम उत्सव के दौरान चित्र बनाने के बाद चर्चा आरंभ होती है। इससे पढ़ना, लिखना व शब्द विकास व वाक्य का ज्ञान सहज रूप से होने लगता है। चित्रों पर बच्चों के नाम अंकित किए जाते हैं। आगे चलकर इन चित्रों को पुस्तकाकार रूप दिया जाता है। अध्यापकगण बच्चों से पुस्तक के नाम हेतु सुझाव आमंत्रित करते हैं। इस पुस्तक को देखने के बाद अध्यापक, गाँव के सयाने लोग जो इस तरह की गतिविधियाँ करते हैं, जानकर बड़े खुश होते हैं कि उनका ज्ञान किताबों में समाहित हो रहा है।

बच्चों के अंतर्मन में छिपी कला चित्र के बहाने वाचिक और लिखित रूप में उभर कर आगे आती है। जब अध्यापक बच्चों को चित्र बनाने के लिए कहते हैं, तो बच्चे सोचने लगते हैं और अपनी सृजनकला को कागज पर प्रस्तुत करते हैं। बच्चों को चित्र बनाना बड़ा अच्छा लगता है। ये चित्र उनका मनोरंजन करने के साथ ही उन्हें ज्ञान भी देते हैं।

'बड़ी बाटा' और तेलंगाना सरकार

तेलंगाना सरकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 व राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2011 के दिशा-निर्देशों के तहत बच्चों को पाठशाला की ओर लालायित करने के लिए 'बड़ी बाटा' कार्यक्रम जैसे कार्यक्रम का आयोजन कर रही है। चूँकि, देश में तेलंगाना की साक्षरता दर अत्यंत चिंताजनक है, इसलिए सरकार नवोन्मेष कार्यक्रमों के प्रति तत्पर है।

सरकार की मानें तो 'बड़ी बाटा' कार्यक्रम का लक्ष्य किसी बच्चे के स्कूली जीवन को उसके घर, आस-पड़ोस के जीवन से जोड़ना है। इसके लिए बच्चों

© NCERT not to be republished

चित्र 1— बालकथा — साहसम
चौथी कक्षा की छात्रा साहिति द्वारा बनाया गया चित्र

को स्कूल में अपने बाह्य अनुभवों के बारे में बात करने का मौका देना चाहिए। उसे सुना जाना चाहिए ताकि बच्चे को लगे कि शिक्षक उसकी बात को तवज्जो दी जा रही है।

'बड़ी बाटा' कार्यक्रम साध्य और साधन दोनों के सही होने वाले मुद्दे पर चर्चा करने वाला उत्सव है। इसके अनुसार मूल्य शिक्षा अलग से न होकर बल्कि शिक्षा की पूरी प्रक्रिया में शामिल होनी चाहिए। तभी हम बच्चों के सामने सही उदाहरण पेश कर पाएँगे। सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करने और जीवन जीने के अन्य तरीकों के प्रति भी सम्मान का भाव विकसित करने की बात यह उत्सव करता है। उदाहरण के लिए, तेलंगाना में वरंगल के एटुरु नागाराम और आदिलाबाद के उटनूर में अलग-अलग तरह के परिधान पहनते हैं, जो उनकी संस्कृति के परिचयाक हैं। इतना ही नहीं यह वैयक्तिक अंतर के महत्व को स्वीकार करने की बात भी करता है। दिव्यांग बच्चों के साथ बिना किसी प्रकार का भेदभाव किए सबको समुचित अवसर प्रदान किए जाते हैं।

यह उत्सव बच्चे को अपनी क्षमताएँ और कौशल की पहचान कर उसे फलने-फूलने के अवसर प्रदान करने पर बल देता है। इन्हें पाठशाला में व्यक्त करने का मौका देना चाहिए, जैसे— संगीत, कला, नाट्य, चित्रकला, साहित्य (किस्से कहानियाँ कहना), नृत्य एवं प्रकृति के प्रति अनुराग इत्यादि। ज्ञान के वस्तुनिष्ठ तरीके के साथ-साथ साहित्यिक एवं कलात्मक रचनात्मकता को भी मनुष्य के ज्ञानात्मक उपक्रम का एक हिस्सा माना गया है। यहाँ पर तर्क (वैज्ञानिक अन्वेषण) के साथ-साथ भावना (साहित्य) के पहलू को भी महत्व देने की बात कही गई है।

सुझाव

'बड़ी बाटा' कार्यक्रम के अंतर्गत देखा गया कि बच्चों में भाषायी कौशल और गणित के सामान्य सवालों को हल करने के कौशल प्रदान करने का प्रयास तो ठीक है किंतु यह चिंता भी जगाती है कि क्या हमारे शिक्षक और अन्य संसाधन इस योजना को पूरा करने में सक्षम और समर्थ हैं? क्या हमारे पास इस योजना को सफल बनाने के लिए पूरी कार्ययोजना और रणनीति तैयार है? आदि, क्योंकि इससे पूर्व भी देशभर में इन बुनियादी कौशलों के विकास के लिए विभिन्न योजनाओं की शुरूआत की गई। जिसके शत-प्रतिशत परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं।। इससे पूर्व देशभर में ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, सर्व शिक्षा अभियान आदि की भी शुरूआत की गई।

© NCERT not to be republished

इन तमाम अभियानों में जो कमी देखी गई वह इनके कार्यान्वयन स्तर पर थी। ये योजनाएँ अपने उद्देश्यों एवं लक्ष्यों में तो स्पष्ट थीं किंतु इन्हें सही तरीके से रणनीति बनाकर क्रियान्वित नहीं किया गया। बाल गंगाधर तिलक द्वारा प्रारंभिक स्तर पर नि:शुल्क शिक्षा की माँग सन् 1911 में उठी थी। किंतु यह सपना शिक्षा का अधिकार अधिनियम, (आरटीई) 2009 के रूप में एक अप्रैल, 2010 से देशभर में लागू किया गया लेकिन इसमें भी कई खामियाँ पाई गईं। क्या इस आरटीई में कोई कमी थी या फिर इसे जिस शिद्दत से स्वीकारा जाना चाहिए था या फिर क्रियान्वित करने में हमसे कोई चूक रह गई इसे भी समझना होगा। इस संदर्भ में हमें 'बड़ी बाटा' कार्यक्रम के इस प्रयास को देखने और समझने की आवश्यकता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी और रिक्त पदों को भरने की ओर भी योजनाबद्ध तरीके से कार्ययोजना तैयार करने सुझाव प्राप्त हुआ। चूँकि, इसके बगैर यह कार्यक्रम भी अन्य कार्यक्रम के तर्ज़ पर विफल हो सकता था, किंतु तेलंगाना सरकार ने इस पर सकारात्मक कार्य किया। पढ़ना और लिखना गणित की बुनियादी कौशल विकास को न केवल इस कार्यक्रम में शामिल किया है बल्कि सतत् विकास लक्ष्य को भी प्रमुख माना गया है। यदि तेलंगाना सरकार इस लक्ष्य को हासिल कर पाती है तो यह अन्य राज्यों की सरकार के लिए भी मिसाल कायम करेगा। इसे सफल बनाने के लिए राज्य सरकार के साथ समाज के अन्य तबको भी ज़िम्मेदारी लेनी होगी।

निष्कर्ष

'बड़ी बाटा' का अर्थ है— पाठशाला (बड़ी) की ओर जाने वाला रास्ता (बाटा)। तेलंगाना सरकार ने अपनी शैक्षिक रिपोर्टों में पाया है कि अधिकतर प्रारंभिक स्तर के बच्चे किसी न किसी कारणवश पाठशाला छोड़ रहे हैं। ये कारण पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक या फिर कोई अन्य हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में इन्हें पाठशाला के प्रति आकर्षित करने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जाने की आवश्यकता है। तेलंगाना सरकार ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए 'बड़ी बाटा' जैसा नूतन तथा नवोन्मेषी कार्यक्रम चलाने की योजना बनायी। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि इस कार्यक्रम के आरंभ से पाठशाला छोड़ चुके बच्चे फिर से पाठशाला की ओर लौटने लगे। यह गुणवत्तापूर्ण परिणाम तभी संभव हो पाया जब समाज के सभी सरोकारों को इससे जोड़ा गया। माता-पिता, अभिभावक, समाज के प्रमुख, स्वैच्छिक संगठन, अध्यापक और सबसे महत्वपूर्ण बच्चों की ललक ने कार्यक्रम को एक नया आयाम दिया। फिर चाहे माता-पिता के सुझावों का स्वागत करना हो या स्वैच्छिक संगठनों की पहल हो। सभी ने मिलकर पाठशाला की मूलभूत सुविधाओं में वृद्धि करने के साथ-साथ बच्चों की अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए उनकी पठन सामग्री को हाथों-हाथ लिया और इन्हें शिक्षण का अंग बनाया गया। यही कारण है कि आज यह कार्यक्रम तेलंगाना में 'बड़ी बाटा' सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा. 2011. रा.शै.अ.प्र.प. तेलंगाना, हैदराबाद.

रा.शै.अ.प्र.प. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्., नयी दिल्ली.

———. 2008. *राष्ट्रीय फ़ोकस समह का आधार पत्र — पाठ्यचर्या बदलाव के लिए व्यवस्थागत सुधार*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

———. 2009. *राष्ट्रीय फ़ोकस समह का आधार पत्र — शैक्षिक तकनीकी*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

भारत सरकार. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished